भारत की राष्ट्रपति
श्रीमती द्रौपदी मुर्मु
का
ICMR, राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के स्वर्ण जयंती समारोह के शुभारंभ के अवसर पर संबोधन

नई दिल्ली: 17 नवम्बर, 2026

आज मुझे ICMR-राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की स्वर्ण जयंती के शुभारंभ के उपलक्ष में आयोजित इस समारोह में उपस्थित होकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। इस महत्वपूर्ण अवसर पर संस्थान से जुड़े सभी पूर्व और वर्तमान नीति-निर्माताओं, वैज्ञानिकों और स्वास्थ्य-कर्मियों को मैं हार्दिक बधाई देती हूं।

देवियो और सज्जनो,

मलेरिया भारत समेत, विश्व के अनेक देशों में लंबे समय से एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती रही है। स्वतंत्रता के समय, मलेरिया हमारे देश में सबसे गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौतियों में से एक था। मैंने स्वयं देखा है कि मलेरिया लोगों के जीवन को किस प्रकार प्रभावित करता था। मानसून के दौरान बुखार को प्राय: जीवन की एक अनिवार्य परेशानी के रूप में स्वीकार कर लिया जाता था। बच्चे स्कूल नहीं जा पाते थे, किसान और मजदूर कई-कई दिन काम नहीं कर पाते थे। लोगों के लिए मलेरिया केवल स्वास्थ्य की समस्या नहीं थी, यह उनकी आजीविका, शिक्षा और भविष्य से भी जुड़ा हुआ था।

यह संतोष का विषय है कि पिछले कुछ वर्षों में भारत ने मलेरिया नियंत्रण की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है। बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं, आधुनिक जांच

तकनीकों, प्रभावी दवाओं, मच्छर नियंत्रण अभियानों और सामुदायिक भागीदारी ने इस बीमारी के प्रसार को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मुझे बताया गया है कि वर्ष 2015 और 2025 के बीच, देश में मलेरिया के मामलों और इससे होने वाली मृत्यु में लगभग 80 प्रतिशत की कमी आई है और अत्यधिक प्रभावित जिलों की संख्या 155 से घटकर 33 रह गई है। वर्ष 2022-2025 के दौरान 160 जिलों में शून्य स्थानीय मलेरिया मामले रिपोर्ट हुए हैं। मलेरिया उन्मूलन की दिशा में भारत की प्रगति को वैश्विक स्तर पर भी सराहना मिली है। वर्ष 2024 में भारत विश्व स्वास्थ्य संगठन के High Burden to High Impact समूह से बाहर निकल गया है। यह उपलब्धि हमारे जनस्वास्थ्य कार्यक्रमों, वैज्ञानिकों, स्वास्थ्यकर्मियों और नागरिकों के सामूहिक प्रयासों से संभव हुई है।

मलेरिया के विरुद्ध इस लंबी लड़ाई में राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की अहम भूमिका रही है। वर्ष 1977 में मलेरिया अनुसंधान केंद्र के रूप में स्थापित इस संस्थान ने पिछले पाँच दशकों में मलेरिया के परजीवियों, मच्छरों, रोगवाहक नियंत्रण, कीटनाशक प्रतिरोध तथा सामुदायिक निगरानी जैसे क्षेत्रों में अग्रणी अनुसंधान किया है।

देवियो और सज्जनो,

मलेरिया अभी भी कुछ क्षेत्रों में एक चुनौती बना हुआ है। इसलिए इस बीमारी के उन्मूलन के लिए निरंतर सतर्कता और प्रभावी प्रयास आवश्यक हैं। मलेरिया की जांच, उपचार और निगरानी तथा मच्छरों पर नियंत्रण की उचित व्यवस्था पर ध्यान देना जरूरी है। साथ ही, मलेरिया की नई दवाइयों और टीकों के विकास के लिए अनुसंधान और सबसे बढ़कर जन-जागरूकता तथा लोगों की भागीदारी, मलेरिया-उन्मूलन के लिए महत्वपूर्ण हैं।

जलवायु परिवर्तन, अनियोजित शहरीकरण और मच्छरों में कीटनाशकों के प्रति बढ़ती प्रतिरोधक क्षमता जैसी नई चुनौतियां इस बीमारी के उन्मूलन में हमारे सामने नयी बाधाएं उपस्थित कर सकती हैं। ऐसे में केवल स्वास्थ्य-कर्मियों के प्रयास मलेरिया को फैलने से नहीं रोक सकते हैं। इसके लिए जलभराव को रोकने, मच्छरों के स्रोतों को खत्म करने और पर्यावरण प्रबंधन पर भी काम करना होगा। मुझे आशा है कि हमारे नीति-निर्माता और वैज्ञानिक समुदाय इस दिशा में सजग प्रयास कर रहे हैं।

मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान ने भुवनेश्वर स्थित National Institute of Health Research द्वारा विकसित की जा रही स्वदेशी मलेरिया वैक्सीन के निर्माण में योगदान दिया है। मुझे विश्वास है कि यह वैक्सीन न केवल भारत के मलेरिया उन्मूलन मिशन को बल देगा बल्कि अन्य देशों में भी मलेरिया नियंत्रण में सहायक होगा।

देवियो और सज्जनो,

हाल के वर्षों में डेंगू भी देश में एक बड़ी चुनौती के रूप में उभरा है। Global warming तथा मानसून के पैटर्न में परिवर्तन के कारण इस चुनौती के और भी प्रबल होने की संभावना है। ICMR के शोध और अनुसन्धानों ने Tuberculosis, Leprosy और कालाजार जैसे बीमारियों के विरुद्ध हमारी लड़ाई को दिशा दी है। इसने हमारे राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों को स्वरूप प्रदान करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कोविड-19 महामारी के दौरान, ICMR ने रिकॉर्ड समय में देशव्यापी परीक्षण नेटवर्क स्थापित किया और भारत के पहले स्वदेशी कोविड-19 टीके के विकास में साझेदारी की। मुझे विश्वास है कि ICMR डेंगू जैसी बीमारियों के निदान के लिए भी कारगर कदम उठा रहा होगा।

स्वदेशी medical technology और equipment का विकास देशवासियों को affordable और quality healthcare उपलब्ध कराने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। मुझे बताया गया है कि ICMR किफायती चिकित्सा उपकरणों और नैदानिक जाँच टेक्नोलॉजी में innovations को प्रोत्साहित कर रहा है।

मानव-स्वास्थ्य अन्य प्राणियों और पर्यावरण से परस्पर जुड़ा हुआ है। इसलिए समग्र स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से कार्य करना अत्यंत आवश्यक है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि 'राष्ट्रीय वन हेल्थ मिशन' के माध्यम से, ICMR देश की उस क्षमता को सुदृढ़ कर रहा है, जिससे मनुष्यों, पशुओं या पर्यावरण में उत्पन्न होने वाले अगले प्रकोप का समय रहते पता लगाया जा सकेगा और उससे प्रभावी ढंग से निपटा जा सकेगा।

देवियो और सज्जनो,

स्वर्ण जयंती का अवसर अपनी अतीत की उपलब्धियों को स्मरण करने और उन पर गर्व करने का अवसर तो होता है ही, साथ ही भविष्य के लिए निर्णायक लक्ष्य निर्धारित करने का भी अवसर होता है। हम वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनाने के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ रहे हैं। स्वस्थ और सशक्त भारत के निर्माण में अनुसंधान संस्थानों, तकनीकी और उच्च शिक्षा के केन्द्रों और उद्योग जगत के बीच सुदृढ़ सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है। अपने अनुभवों के आधार पर ICMR जैसे अग्रणी संस्थान ऐसे सहयोग का नेतृत्व कर सकते हैं। मुझे विश्वास है कि ICMR और उससे जुड़े संस्थान शोध, सहयोग और नवाचार के माध्यम से विकसित भारत के स्वास्थ्य संबंधी लक्ष्यों को पूरा करने में अपना योगदान देंगे। मेरी शुभकामनाएं आप सब के साथ हैं।

धन्यवाद,

जय हिंद!

जय भारत!